वर्ष-17 अंक-247 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रुपए कानपुर, शुक्रवार 08 सितम्बर 2023

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात में प्रसारित

दैनिक नगर छाया

RNI N.UPHIN/2007/27090

आप की आवाज़.....

पर इलाज स रागा ठाक हा रह।

सितंबर माह में करें बाजरा फसल का प्रबंधन, लें अधिक उत्पादन

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉक्टर राम कुमार सिंह ने कृषकों को एडवाइजरी जारी करते हुए बताया कि अधिक बाजरे का उत्पादन और लाभ हेतु उन्नत तकनीक अपनाना आवश्यक है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि भारत विश्व का अग्रणी बाजरा उत्पादक देश है यहां लगभग 85 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में बाजरे की खेती की जाती है। जिसमें 87 प्रतिशत क्षेत्र राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश में है। उन्होंने बताया कि देश के शुष्क एवं अर्ध शुष्क क्षेत्रों में यह प्रमुख खाद्य फसल है और साथ ही पशुओं के पौष्टिक चारा उत्पादन के लिए भी बाजरे की खेती की जाती है।डॉ राम कुमार सिंह ने बताया कि पोषण की दृष्टि से इसके दाने में अपेक्षाकृत अधिक प्रोटीन 10.8 से 14.5 प्रतिशत और वसा 0.4 से 8 प्रतिशत मिलती है। वही कार्बोहाइड्रेट, खनिज तत्व, कैल्शियम, कैरोटीन, राइबोफ्लेविन, विटामिन B2 और नाइसीन, विटामिन बी6 भी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। गेहूं एवं चावल की अपेक्षा इस में लौह तत्व भी अधिक होते हैं। उन्होंने बताया कि अधिक ऊर्जामान के कारण इसे सर्दियों में खाना अधिक पसंद किया जाता है। उन्होंने बताया कि भारत में कुल बाजरे का क्षेत्रफल लगभग 95 प्रतिशत असिंचित है उन्होंने कृषकों को सलाह दी है कि वर्षा न होने के कारण भूमि में नमी बनाए रखें। डॉ सिंह ने कहा कि सितंबर माह में बाजरे की फसल में लगभग बालियां निकलने लगती है जिसमें रोगों का प्रकोप अधिक होता है इनका समय से प्रबंधन करना उचित रहता है उन्होंने बताया कि मृदुरोमिल आशिता रोग बालियों पर दानों के स्थान पर छोटी-छोटी हरी पत्तियां उग जाती हैं। इसकी रोकथाम हेतु 0.35 प्रतिशत कॉपर ऑक्सिक्लोराइड का पर्णीय छिड़काव कर दें। दूसरे रोग के लिए बताया कि अरगट रोग लगता है जो बालियों में शहद जैसा चिपचिपी बूंदे दिखाई देती हैं इसके नियंत्रण के लिए खड़ी फसल में बावस्टीन 0.1 प्रतिशत का दो तीन बार पर्णीय छिड़काव कर दें।

बाजरा सेहत के लिए लाभकारी

सितंबर माह में करें बाजरा फसल का प्रबंधन

डीटीएनएन

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉक्टर राम कुमार सिंह ने कृषकों को एडवाइजरी जारी करते हुए बताया कि अधिक बाजरे का उत्पादन और लाभ हेतु उन्नत तकनीक अपनाना आवश्यक है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि भारत विश्व का अग्रणी बाजरा उत्पादक देश है यहां लगभग 8 5 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में बाजरे की खेती की जाती है। जिसमें 87% क्षेत्र राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश में है। उन्होंने बताया कि देश के शुष्क एवं अर्ध शुष्क क्षेत्रों में यह प्रमुख खाद्य फसल है और साथ ही पशुओं के पौष्टिक चारा उत्पादन के लिए भी बाजरे की खेती की जाती है।डॉ राम कुमार सिंह ने बताया कि पोषण की दृष्टि से इसके दाने में अपेक्षाकृत अधिक प्रोटीन 10.8 से 14.5% और वसा 0.4 से 8 त्र मिलती है। वही कार्बोहाइड्रेट, खनिज तत्व, कैल्शियम, कैरोटीन, राइबोफ्लेविन, विटामिन .2 और नाइसीन, विटामिन बी6 भी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। गेहूं एवं चावल की अपेक्षा इस में लौह तत्व भी अधिक होते हैं। उन्होंने बताया कि अधिक ऊर्जामान के कारण इसे सर्दियों में खाना अधिक पसंद किया जाता है। उन्होंने बताया कि भारत में कुल बाजरे का क्षेत्रफल लगभग 95त्र असिंचित है उन्होंने कृषकों को सलाह दी है कि वर्षा न होने के कारण भूमि में नमी बनाए रखें। डॉ सिंह ने कहा कि सितंबर माह में बाजरे की फसल में लगभग बालियां निकलने लगती हैं जिसमें रोगों का प्रकोप अधिक होता है इनका समय से प्रबंधन करना उचित रहता है उन्होंने बताया कि मृदुरोमिल आशिता रोग बालियों पर दानों के स्थान पर छोटी-छोटी हरी पत्तियां उग जाती हैं। इसकी रोकथाम हेतु 0.35त्र कॉपर ऑक्सिक्लोराइड का पर्णीय छिड़काव कर दें। दूसरे रोग के लिए बताया कि अरगट रोग लगता है जो बालियों में शहद जैसा चिपचिपी बूंदे दिखाई देती हैं इसके नियंत्रण के लिए खड़ी फसल में बावस्टीन 0.1% का दो तीन बार पर्णीय छिड़काव कर दें।

Sign in to edit and save changes to this file.

ंक-182 कानपुर, शुक्रवार 8 सितम्बर 2023 पृष्ठ-8

ैनिक

आज का कानपुर

सितंबर माह में करें बाजरा फसल का प्रबंधन, लें अधिक उत्पादन

आज का कानपुर

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉक्टर राम कुमार सिंह ने कृषकों को एडवाइजरी जारी करते हुए बताया कि अधिक बाजरे का उत्पादन और लाभ हेतु उन्नत तकनीक अपनाना आवश्यक है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि भारत विश्व का अग्रणी बाजरा उत्पादक देश है यहां लगभग 85 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में बाजरे की खेती की जाती है। जिसमें 87त्र क्षेत्र राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश में है उन्होंने बताया कि देश के शुष्क एवं अर्ध शुष्क क्षेत्रों में यह प्रमुख खाद्य फसल है और साथ ही पशुओं के पौष्टिक चारा उत्पादन के लिए भी बाजरे की खेती की जाती है डॉ राम कुमार सिंह ने बताया कि पोषण की दृष्टि से इसके दाने में अपेक्षाकृत अधिक प्रोटीन 10.8 से 14.5त्र और वसा 0.4 से 8 त्र मिलती है वही कार्बोहाइड्रेट, खनिज तत्व, कैल्शियम, कैरोटीन, राइबोफ्लेविन, विटामिन क्व2 और नाइसीन, विटामिन बी6 भी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है गेहूं एवं चावल की अपेक्षा इस में लौह तत्व भी अधिक होते हैं उन्होंने बताया कि अधिक ऊर्जामान के कारण इसे सर्दियों में खाना अधिक पसंद किया जाता है उन्होंने बताया कि भारत में कुल बाजरे का क्षेत्रफल लगभग 95त्र असिंचित है उन्होंने कृषकों को सलाह दी है कि वर्षा न होने के कारण भूमि में नमी बनाए रखें डॉ सिंह ने कहा कि सितंबर माह में बाजरे की फसल में लगभग बालियां निकलने लगती हैं जिसमें रोगों का प्रकोप अधिक होता है इनका समय से प्रबंधन करना उचित रहता है उन्होंने बताया कि मृदुरोमिल आशिता रोग बालियों पर दानों के स्थान पर छोटी-छोटी हरी पत्तियां उग जाती हैं इसकी रोकथाम हेतु 0.35त्र कॉपर ऑक्सिक्लोराइड का पर्णीय छिड़काव कर दें दूसरे रोग के लिए बताया कि अरगट रोग लगता है जो बालियों में शहद जैसा चिपचिपी बूंदे दिखाई देती हैं इसके नियंत्रण के लिए खड़ी फसल में बावस्टीन 0.1त्र का दो तीन बार पर्णीय छिड़काव कर दें।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्ष:14 | अंक:170 | देहरादून, गुरुवार, 07 सितंबर, 2023 | पृष्ठ:08

सितंबर माह में करें बाजरा फसल का प्रबंधन ,लें अधिक उत्पादन

अनिल मिश्रा (जनमत टुडे)

कानपुरः चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉक्टर राम कुमार सिंह ने कृषकों को एडवाइजरी जारी करते हुए बताया कि अधिक बाजरे का उत्पादन और लाभ हेतु उन्नत तकनीक अपनाना आवश्यक है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि भारत विश्व का अग्रणी बाजरा उत्पादक देश है यहां लगभग 85 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में बाजरे की खेती की जाती है। जिसमें 87% क्षेत्र राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश में है उन्होंने बताया कि देश के शुष्क एवं अर्ध शुष्क क्षेत्रों में यह प्रमुख खाद्य फसल है और साथ ही पशुओं के पौष्टिक चारा उत्पादन के लिए भी बाजरे की खेती की जाती है।

जनमत टुडे

City Office: 19 New Road, KSMR Plaza, Dehradun

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक संपादक–अंजली नयाल के लिए मैसर्स इन्टर ग्राफिक 64 नैशविला रोड देहरादून उत्तराखण्ड से

लखनऊ, बरेली, मुरादाबाद,हल्द्वानी, अयोध्या व कानपुर से प्रकाशित

भाद्रपद कृष्ण पक्ष नवमी 05:30 उपरांत दशमी विक्रम संवत 2080

अमृत विचार

एक सम्पूर्ण अखबार

वर्ष 2, अंक 18, पृष्ठ 14, मूल्यः 5 रुपये

देव की होगी भिड़ंत...13

कानपुर, शुक्रवार, 8 सितंबर 2023

www.amritvichar.com

शिल्पा शेट्टी की फिल्म 'सुख

अनुसंधान

प्रदेश में पहली बार हाईड्रोफोनिक तकनीक पर किया जाएगा ट्रायल, 40 दिन में देखी जाएगी फसल

पानी में स्ट्रॉबेरी उगाएगा सीएसए, बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में होगी खेती

शशांक शेखर भारद्वाज

कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) पानी में स्ट्रॉबेरी उगाने की तैयारी में है। यहां के विशेषज्ञ शाकभाजी अनुसंधान अनुभाग में हाईड्रोफोनिक तकनीक पर ट्रायल करने जा रहे हैं। स्ट्रॉबेरी पर इस तरह का ट्रायल प्रदेश में पहली बार किया जा रहा है। सब कुछ ठीक ठाक रहा तो इस तकनीक की मदद से बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में स्ट्रॉबेरी की खेती शुरू जाएगी।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अंतर्गत प्रदेश के 22 जिले आते हैं। यहां पर

सीएसए के शाक भाजी अनुसंधान अनुभाग में बने हाईड्रोफोनिक्स पॉलीहाउस में उगी सब्जियां।

स्ट्रॉबेरी की खेती पहले से ही हो रही है। काफी संख्या में किसान सितंबर से अक्टूबर के बीच इसकी फसल लगाते हैं। इसके लिए पहले नर्सरी से पौध तैयार होती है। करीब 40 दिनों में फल आने लग जाते हैं। स्ट्रॉबेरी में प्रोटीन, कैल्शियम, मैग्निशियम, कार्बोहाईड्रेट, सुक्रोज, फ्रकटोज, विटामिन बी सिक्स, विटामिन सी समेत अन्य तत्व रहते हैं। इन्हीं खूबियों के चलते डॉक्टर और डाईटीशियन इसके सेवन की सलाह देते हैं। स्ट्रॉबेरी की पहाड़ी और ठंडे क्षेत्रों में काफी ज्यादा खेती हो रही है। वहां से इसको मैदानी क्षेत्रों में निर्यात किया जाता है। वहीं सीएसए के शाकभाजी अनुसंधान अनुभाग के विशेषज्ञ पहले ही हाईड्रोफोनिक तकनीक से टमाटर और खीरे को उगाने में सफल हो चुके हैं। कई अन्य फसलों के ट्रायल लगे हुए हैं।

जापानी विशेषज्ञों के साथ किया जाएगा शोध

सीएसए के शाक भाजी अनुसंधान अनुभाग में जापान के विशेषज्ञों के लिए इकाई प्रस्तावित है। यहां पर जापानी सीएसए के विशेषज्ञों के साथ मिलकर तकनीक विकसित करेंगे। सबसे पहले वह उनकी ओर से तैयार किए गए मॉडलों (मेड इन जापान) को भारतीय खेती की आवश्यकता के अनुरूप मॉडिफाइड करेंगे, जबकि उनसे नए उपकरण विकसित करने की तैयारी है।

आईएआरआई दिल्ली से मंगवाए जा रहे पौधे: सब्जी विज्ञान विभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डीपी सिंह ने बताया कि स्ट्रॉबेरी के पौधे भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई) से मंगवाए गए हैं। इन पर 40 दिनों तक ट्रायल किया जाएगा।विश्वविद्यालय के जीटी रोड किनारे स्थित शाक भाजी अनुसंधान अनुभाग में बने हाईड्रोफोनिक पॉलीहाउस में इनकी गुणवत्ता, रंग, वजन, उत्पादन, रोग प्रतिरोधक क्षमता, रस आदि का आकलन किया जाएगा। पहले ट्रायल में सफल होने के बाद कई अन्य फलों पर कार्य करने की प्लानिंग है। स्ट्रॉबेरी पर प्रदेश भर में पहली बार हाईड्रोफोनिक तकनीक पर कार्य किया जा रहा है।

दैनिक उज्जवल ग्वालियर

उत्तरप्रदेश

सितंबर माह में करें बाजरा फसल का प्रबंधन,लें अधिक उत्पादन

जिला संवाददाता रामवीर कुशवाहा

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉक्टर राम कुमार सिंह ने कृषकों को एडवाइजरी जारी करते हुए बताया कि अधिक बाजरे का उत्पादन और लाभ हेतु उन्नत तकनीक अपनाना आवश्यक है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि भारत विश्व का अग्रणी बाजरा उत्पादक देश है यहां लगभग 85 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में बाजरे की खेती की जाती है। जिसमें 87त्न क्षेत्र राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश में है। उन्होंने बताया कि देश के शुष्क एवं अर्ध शुष्क क्षेत्रों में यह प्रमुख खाद्य फसल है और साथ ही पशुओं के पौष्टिक चारा उत्पादन के लिए भी बाजरे की खेती की जाती है।डॉ राम कुमार सिंह ने बताया कि पोषण की दृष्टि से इसके दाने में अपेक्षाकृत अधिक प्रोटीन 10.8 से 14.5त्न और वसा 0.4 से 8 त्न मिलती है। वही कार्बोहाइड्रेट, खनिज तत्व, कैल्शियम, कैरोटीन, राइबोफ्लेविन, विटामिन क्ब्2 और नाइसीन, विटामिन बी6 भी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। गेहूं एवं चावल की अपेक्षा इस में लौह तत्व भी अधिक होते हैं। उन्होंने बताया कि अधिक ऊर्जामान के कारण इसे सर्दियों में खाना अधिक पसंद किया जाता है। उन्होंने बताया कि भारत में कुल बाजरे का क्षेत्रफल लगभग 95त्न असिंचित है उन्होंने कृषकों को सलाह दी है कि वर्षा न होने के कारण भूमि में नमी बनाए रखें। डॉ सिंह ने कहा कि सितंबर माह में बाजरे की फसल में लगभग बालियां निकलने लगती हैं जिसमें रोगों का प्रकोप अधिक होता है इनका समय से प्रबंधन करना उचित रहता है उन्होंने बताया कि मृदुरोमिल आशिता रोग बालियों पर दानों के स्थान पर छोटी-छोटी हरी पत्तियां उग जाती हैं। इसकी रोकथाम हेतु 0.35त्न कॉपर ऑक्सिक्लोराइड का पर्णीय छिड़काव कर दें। दूसरे रोग के लिए बताया कि अरगट रोग लगता है जो बालियों में शहद जैसा चिपचिपी बूंदे दिखाई देती हैं इसके नियंत्रण के लिए खड़ी फसल में बावस्टीन 0.1त्न का दो तीन बार पर्णीय छिड़काव कर दें।

सितंबर माह में बाजरा फसल का प्रबंधन करने से होगा अधिक उत्पादन

दैनिक कानपुर उजाला

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉक्टर राम कुमार सिंह ने कृषकों को एडवाइजरी जारी करते हुए बताया कि अधिक बाजरे का उत्पादन और लाभ हेतु उन्नत तकनीक अपनाना आवश्यक है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि भारत विश्व का अग्रणी बाजरा उत्पादक देश है यहां लगभग 85 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में बाजरे की खेती की जाती है। जिसमें 87 प्रतिशत क्षेत्र राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश में है। उन्होंने बताया कि देश के शुष्क एवं अर्ध शुष्क क्षेत्रों में यह प्रमुख खाद्य फसल है और साथ ही पशुओं के पौष्टिक चारा उत्पादन के लिए भी बाजरे की खेती की जाती है। डॉ राम कुमार सिंह ने बताया कि पोषण की दृष्टि से इसके दाने में अपेक्षाकृत अधिक प्रोटीन 10.8 से 14.5 प्रतिशत और वसा 0.4 से 8 प्रतिशत मिलती है। वही कार्बोहाइड्रेट, खनिज तत्व, कैल्शियम, कैरोटीन, राइबोफ्लेविन, विटामिन बी2 और नाइसीन, विटामिन बी6 भी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। गेहूं एवं चावल की अपेक्षा इस में लौह तत्व भी अधिक होते हैं। उन्होंने बताया कि अधिक ऊर्जामान के कारण इसे सर्दियों में खाना अधिक पसंद किया जाता है। उन्होंने बताया कि भारत में कुल बाजरे का क्षेत्रफल लगभग 95 प्रतिशत असिंचित है उन्होंने कृषकों को सलाह दी है कि वर्षा न होने के कारण भूमि में नमी बनाए रखें। डॉ सिंह ने कहा कि सितंबर माह में बाजरे की फसल में लगभग बालियां निकलने लगती हैं जिसमें रोगों का प्रकोप अधिक होता है इनका समय से प्रबंधन करना उचित रहता है उन्होंने बताया कि मृदुरोमिल आशिता रोग बालियों पर दानों के स्थान पर छोटी-छोटी हरी पत्तियां उग जाती हैं। इसकी रोकथाम हेतु 0.35 प्रतिशत कॉपर ऑक्सिक्लोराइड का पर्णीय छिड़काव कर दें। दूसरे रोग के लिए बताया कि अरगट रोग लगता है जो बालियों में शहद जैसा चिपचिपी बूंदे दिखाई देती हैं इसके नियंत्रण के लिए खड़ी फसल में बावस्टीन 0.1 प्रतिशत का दो तीन बार पर्णीय छिड़काव कर दें।

WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

गुरुवार

07 सितंबर, 2023

अंक - 32

सितंबर माह में करें बाजरा फसल का प्रबंधन, लें अधिक उत्पादन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉक्टर राम कुमार सिंह ने कृषकों को एडवाइजरी जारी करते हुए बताया कि अधिक बाजरे का उत्पादन और लाभ हेतु उन्नत तकनीक अपनाना आवश्यक है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि भारत विश्व का अग्रणी बाजरा उत्पादक देश है यहां लगभग 85 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में बाजरे की खेती की जाती है। जिसमें 87त्न क्षेत्र राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश में है। उन्होंने बताया कि देश के शुष्क एवं अर्ध शुष्क क्षेत्रों में यह प्रमुख खाद्य फसल है और साथ ही पशुओं के पौष्टिक चारा उत्पादन के लिए भी बाजरे की खेती की जाती है।डॉ राम कुमार सिंह ने बताया कि पोषण की दृष्टि से इसके दाने में अपेक्षाकृत अधिक प्रोटीन 10.8 से 14.5त्न और वसा 0.4 से 8 त्न मिलती है। वही कार्बोहाइड्रेट, खनिज तत्व, कैल्शियम, कैरोटीन, राइबोफ्लेविन, विटामिन त्न2 और नाइसीन, विटामिन बी6 भी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। गेहूं एवं चावल की अपेक्षा इस में लौह तत्व भी अधिक होते हैं। उन्होंने बताया कि अधिक ऊर्जामान के कारण इसे सर्दियों में खाना अधिक पसंद किया जाता है। उन्होंने बताया कि भारत में कुल बाजरे का क्षेत्रफल लगभग 95त्न असिंचित है उन्होंने कृषकों को सलाह दी है कि वर्षा न होने के कारण भूमि में नमी बनाए रखें। डॉ सिंह ने कहा कि सितंबर माह में बाजरे की फसल में लगभग बालियां निकलने लगती हैं जिसमें रोगों का प्रकोप अधिक होता है इनका समय से प्रबंधन करना उचित रहता है उन्होंने बताया कि मृदुरोमिल आशिता रोग बालियों पर दानों के स्थान पर छोटी-छोटी हरी पत्तियां उग जाती हैं। इसकी रोकथाम हेतु 0.35त्न कॉपर ऑक्सिक्लोराइड का पर्णीय छिड़काव कर दें। दूसरे रोग के लिए बताया कि अरगट रोग लगता है जो बालियों में शहद जैसा चिपचिपी बूंदे दिखाई देती हैं इसके नियंत्रण के लिए खड़ी फसल में बावस्टीन 0.1त्न का दो तीन बार पर्णीय छिड़काव कर दें।